

Michael Genner
Mein Vater
Laurenz Genner

Ein Sozialist im Dorf

Nachwort von Karl R. Stadler

Europaverlag
Wien · München · Zürich

533

Inhalt

ERSTES BUCH

| | |
|---|----|
| Die Erste Republik | 9 |
| 1. Heut' wird's hoabß | 11 |
| 2. Die Vorfahren in der »Wild« | 17 |
| 3. Der »Lenz«. Kindheit und Jugend | 22 |
| 4. Bauer ohne Land | 27 |
| 5. Arbeiter und Bauern | 31 |
| 6. Die Revolution | 37 |
| 7. Das sozialdemokratische Agrarprogramm (1925) | 42 |
| 8. Rote Bauernzellen | 45 |
| 9. Ein Wall von Stahl und Eisen | 55 |
| 10. Im Parlament und auf der Straße | 66 |
| 11. Winter 1932/33 – Hungersnot | 76 |
| 12. Verloren und vertan | 80 |
| 13. Fünf vor zwölf | 89 |
| 14. Zwölfter Februar | 99 |

ZWEITES BUCH

| | |
|--|-----|
| Illegalität | 109 |
| 1. Der Zusammenbruch | 111 |
| 2. Neben dem Gleis | 121 |
| 3. Wir beugen uns nicht! | 136 |
| 4. Gestapo | 145 |
| 5. Lehrbriefe über politische Moral | 149 |
| 6. Die Rote Front (1941/42) | 155 |
| 7. Die Bäuerin und der Kriegsgefangene | 171 |
| 8. Verhaftung und Flucht | 177 |

DRITTES BUCH

| | |
|---|-----|
| Die Zweite Republik | 185 |
| Statt einer Einleitung: Das Zeugnis eines Sozialisten | 187 |
| 1. 1945, Jahr der Befreiung | 191 |
| 2. Zerreißung Österreichs | 210 |
| 3. Der Kampf um die Bodenreform | 220 |
| 4. Kudlich-Tag. Ablieferungskrieg (1948) | 239 |
| 5. Sommerein | 248 |
| 6. Reithers Sturz | 253 |
| 7. Der Verdacht | 260 |

| | |
|--|-----|
| 8. Der Bund der kleinen Landwirte | 265 |
| 9. Vormarsch der Reaktion | 275 |
| 10. Die Volksopposition | 281 |
| 11. Der Bruch mit der Kommunistischen Partei (1954/57) | 290 |
| <hr/> | |
| Zu diesem Buch (Prof. Dr. Karl R. Stadler) | 303 |
| <hr/> | |
| Anmerkungen | 307 |
| <hr/> | |